भजन

कैसे तेरा शुकराना बजाए कैसे तेरे गुण हम गाए
हो पियाजी सुख के निधान हो वालाजी गुण के निधान ।

1 कोट मुख कोट जुबाँ कोट बेर कहूँ तो भी, गुण तेरे कहे ना जाए
गुण तो तेरे अनगिन है कैसे गिने मेरे पिया,गुण तेरे गिने ना जाए
तेरी मेहर वो ही पायें.....
मांगे तो बस मेहर मांगे, तेरी मेहर हमको जगाए ... हो पिया .....

2 सुख में भी और दुख में भी तो है तेरा आसरा, अंग संग तेरी मेहर है
लाख जुबाँ लाख जतन लाख बेर करें तो भी, तेरी मेहर तो अनगिन है
रहती सदा हर पल छीन है.....
अवगुण मेरे बढ़ते जाए, तेरे गुण ही तो हमको बतायें। हो.....

3 सारी ज़िमी कागज़ हो पेड़ सारे लेखनी और, सागरों की स्याही बनाऊँ
तारे सारे आसमां के बन जाऐं अक्षर, तो गुण लिख नही पाऊँ
स्वांस स्वांस तेरे गुण गाऊं.....
कोट गुना गुण बढ़ते जाऐं, अवगुण मेरे जिसमे समाऐं हो पियाजी....